आशा शैली

ई-मेल-asha.shaili@gmail.com

एक और बेताल कथा

"मुझे एक बात समझ में नहीं आई दीदी।"

अरुण अपनी बहन के फैसले से हैरान था। वह उसे अपने निकट ही किराए पर उसके लिए घर खोजने को कह रही थी।

"क्या समझ में नहीं आया रे?"

"ऐसे भरे-पूरे परिवार और अपने खुद के घर को छोड़कर किराए के घर में रहने को कह रही हो। आखिर क्यों?" अरुण ने पूछा तो रुक्मणि ने हँसते हुए कहा, "एक कहानी सुनो। यह कहानी बेताल ने विक्रम को सुनाई थी।

एक नगर में एक किसान की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी और बेटे-बहुओं में सम्पत्ति को लेकर रोज झगड़ा रहने लगा। दोनों बेटे और बहुएँ चाहते थे कि माँ पूरी सम्पत्ति दो भागों में बाँट दे; परन्तु किसान की पत्नी ऐसा नहीं कर रही थी। तब एक दिन दोनों बेटों ने माँ को मार डालने की योजना बनाई और इसके लिए वे अवसर खोजने लगे।

संयोग से उन दिनों उस नगर के बीचों-बीच बहने वाली गम्भीर नदी में सरकार ने दो मगरमच्छ छोड़े थे। बेटों ने अपने ट्रक के चालक से मिलकर योजना बनाई कि एक सप्ताह बाद जब वे फसल से भरा ट्रक मण्डी को भेजेंगे, उसी समय बुढ़िया को गला घोंटकर बोरे में भर देंगे और चालक बोरा नदी में फेंक देगा। पर चालक इस बात पर सहमत ही नहीं हो रहा था।

यह भी संयोग ही था कि जब रात को वे चालक के साथ मंत्रणा कर रहे थे तो माँ उस तरफ जा निकली और उसने बात सुन ली पर अधूरी; निर्णय क्या निकला पता नहीं। पर्याप्त समय था उसके पास, उसने सारे जेवर और जमीन के कागज़ समेटे और घर छोड़ दिया।

इतना कहकर बेताल ने पूछा—अब बताओ राजा, क्या उस किसान की स्त्री ने गलत किया?"

अरुण आश्चर्य से बहन का मुख देख रहा था क्योंकि यह कहानी तो...

रुक्मणि के मुख पर एक तीखी मुस्कान थी और आँखों में चमक।